

पपीते के खेती की उन्नत तकनीक

पवन कुमार पारीक, दीपक सरोलिया, पी के यादव एवं रोहताश कुमार

कृषि महाविद्यालय, बीकानेर

भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर

पपीता कैरीकेसी परिवार का फल है पपीते का पौधा बहुत जल्दी बढ़ कर एक साल में ही फल देने लगता है, यह विटामिन ए व सी का अच्छा स्रोत है। यह फल संसार के सभी देशों के उष्ण और उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में आसानी से उगाया जाता है।

पपीता के फल में घुलनशील रेशा काफी मात्रा में होता है जो कि शरीर के कोलेस्ट्रॉल और चर्बी की मात्रा को कम करता है। लाल गूदे वाले पपीते में लाइकोपीन नामक पदार्थ काफी मात्रा में पाया जाता है जो लगभग 1350-3674 माइक्रोग्राम/100 ग्राम तक होता है और दुसरे पौष्टिक तत्व जैसे कार्बोहाइड्रेट्स, प्रोटीन, विटामिन सी तथा खनिज लवण अच्छी मात्रा में होते हैं। इसके सेवन करने से पाचन क्रिया ठीक रहती है तथा आंतों, तपेदिक, दमा, निमोनिया और नेत्र रोगों से राहत मिलती है। पपीता के फल पित्तनाशक तथा स्वादिष्ट होता है। पेड़ पर पका हुआ पपीता अधिक गुणकारी होता है। पेट के रोगों में पपीते का सेवन बहुत लाभदायक होता है। पपीता ऐसा फल है जिसके प्रत्येक भाग में

कुछ न कुछ औषधीय गुण पाये जाते हैं। पपीता जल्दी तैयार होने वाले पौष्टिक, स्वादिष्ट तथा अधिक आमदनी देने वाला एक लोकप्रिय फल है। पके फलों के अलावा हरे फलों को खरोंचने से प्राप्त दूध को सूखाकर पपेन प्राप्त होता है।

पपेन एक प्रोटियोलिटिक एंजाइम है जो मांस नरम करने तथा भोजन को पचाने में मदद करता है और इससे बहुत सी दवाइयां तैयार की जाती हैं। इसलिए इसकी अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में भारी मांग है। इस कारण यह फल औषधीय और व्यावसायिक क्षेत्र में अधिक महत्त्व रखता है। पपीते की पैदावार भारत के विभिन्न राज्यों जैसे आंध्र प्रदेश, गुजरात, पश्चिम बंगाल, असम, केरल, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र आदि में होती है।

किस्में :- पपीते की उन्नत किस्में पूसा डेलिशियस, पूसा मेजेस्टी, पूसा, जाइंट, पूसा इवार्फ, पूसा नन्हा, पंत पपीता, हनीड्यू, कुर्ग हनीड्यू, कोयम्बटूर-1, कोयम्बटूर-2, कोयम्बटूर-3, कोयम्बटूर-4, कोयम्बटूर-5, कोयम्बटूर-6, पेन-1, ताईवान हैं।



जलवायु :- यह ऊष्ण जलवायु का पौधा है, जो खुले धूप व पानी की सुविधा वाले इलाके में उपजाया जा सकता है, पपीते की उत्तम पैदावार में लिए गरम और नम जलवायु अच्छी होती है, इसके लिए ज्यादा पानी, पाला और तेज गरम हवा नुकसानदायक होती है।

मिट्टी :- पपीते की खेती वैसे तो सभी प्रकार की मिट्टियों में की जा सकती है, लेकिन हल्की, उपजाऊ, कार्बनिक पदार्थों से भरपूर अच्छे जल निकास वाली और 6.5 से 7.0 पीएच मान वाली मिट्टी सबसे अच्छी मानी जाती है।

बीजदर :- पपीते के पौधे बीज द्वारा तैयार किये जाते हैं, एक हेक्टेयर खेती में प्रति गड्ढे 2 पौधे लगाने पर 5000 हजार पौध संख्या लगेगी। एक हेक्टेयर के लिए 500 ग्राम से एक किलो बीज की आवश्यकता होती है।

पौध रोपाई का समय :- पपीते के पौधे साल में तीन बार जुलाई-अगस्त, सितम्बर-अक्टूबर, व फरवरी-मार्च महीनों में लगाए जा सकते हैं।

पौधरोपण :- तैयार खेत में 45X45X45 सेंटीमीटर आकार के 2X1 मीटर की दूरी पर गड्ढे खोद कर डेढ़ हफ्ते के लिए खुला छोड़ देना चाहिए, फिर गड्ढों में तकरीबन 15 सेंटीमीटर की ऊंचाई तक 3: 1 के अनुपात

में मिट्टी व खाद का मिश्रण देना चाहिए, 2-3 दिन बाद इन में 15 से 20 सेंटीमीटर ऊंचे पौधों की रोपाई कर के फौरन सिंचाई कर देते हैं। पौधे अगर द्विलिंगी किस्म के हो, तो हरेक गड्ढे में 3 पौधे लगाने चाहिए फूल आने पर नर पौधों की संख्या 10 फीसदी ही रखनी चाहिए, जबकि उभयलिंगी किस्म के पौधों को उगाना हो, तो प्रत्येक गड्ढे में सिर्फ एक पौधा ही लगाना चाहिए, क्योंकि इन किस्मों के सभी पौधे या तो मादा होंगे या उभयलिंगी।

खाद व उर्वरक :- एक पौधे को वर्षभर में 250 ग्राम नत्रजन, 250 ग्राम फॉस्फरस एवं 500 ग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है, इसे छः बराबर भाग में बांट कर प्रति 2 माह के अंतर से खाद तथा उर्वरक देना चाहिए इस मिश्रण को नर पौधों को और ऐसे पौधों को नहीं देना चाहिए, जिसे 4 से 6 माह बाद निकालकर फेकना है।

सिंचाई :- पौधे लगाने के बाद हल्की सिंचाई जरूर कर देनी चाहिए, गर्मियों के दिनों में 6-7 दिन के अन्तर पर और सर्दियों में 10-15 दिनों के अंतर पर हल्की सिंचाई करनी चाहिए, सिंचाई करते समय इस बात का जरूर ध्यान रखें कि पानी को अधिक मात्रा में न दिया जाए व पानी पौधे के सीधे संपर्क में न आने पाए। पपीते में अब टपक सिंचाई यानी ड्रिप इरीगेशन की जाने लगी है,



क्योंकि इससे पौधों में तना गलन बीमारी का खतरा कम हो जाता है।

खरपतवार नियंत्रण :- निराई गुड़ाई करते वक्त पौधों के बीच में उगने वाले खरपतवारों को निकालते रहना चाहिए, तनों के चारों तरफ मिट्टी की छोटी मेंड़ चढ़ा देनी चाहिए।

लिंग भेद :- पपीते के 3 तरह के पौधे आते हैं, नर, मादा व उभयलिंगी. खेत में 10 फीसदी नर पौधों को छोड़कर, अनावश्यक पौधों को काट कर हटा देना चाहिए.

पौधों की पाले से सुरक्षा :- नवम्बर महीने में इन पौधों को सूखे घासफूस या खरपतवार से ढक दें. हलकी सिंचाई की व्यवस्था कर पाले से पौधों को बचाया जा सकता है।

फलों की छंटाई एवं उपज :- उत्तम गुणों वाले बड़े फल हासिल करने के लिए अवांछित और छोटे-छोटे फलों को निकाल देना चाहिए. स्वस्थ पेड़ों वाले पपीते की एक हेक्टेयर फसल से 250-400 क्विंटल तक पैदावार मिल जाती है। स्वस्थ पेड़ों पर 25 से 80 फल तक लगते हैं।

फल बनने के तकरीबन एक महीने बाद तनों पर कुछ फलों को बीच-बीच से निकाल कर प्रति गांठ औसतन दो फल छोड़ना जरूरी होता है। ऐसा करने से बचे हुए फलों के आकार में अच्छा विकास हो पाता है।

पौध संरक्षण :- माइट, एफीड्स तथा फल मक्खी जैसे कीटों का प्रकोप पपीते पर देखा गया है। इसके नियंत्रण को मेटासिस्टाक्स 1 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर के दर से तथा दूसरा छिड़काव 15 दिन के अंतर से करना चाहिए। फूट एण्ड स्टेम राट बीमारी से पौधों को बचाने के लिए तने के पास पानी न जमने दें। जिस भाग में रोग लगा हो वहां चाकू से खुरच कर बोडो पेस्ट भर देना चाहिए। पावडरी मिलड्यू के नियंत्रण के लिए सल्फर डस्ट 30 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी के हिसाब से 15 दिन के अंतराल में छिड़काव करें।